महानिदेशक का संदेश

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद ने ''बेहतर स्वास्थ्य के लिए अनुसंधान'' के अपने अधिदेश में महत्वपूर्ण प्रगति की है। परिषद ने अपनी सभी प्रमुख गतिविधियों के माध्यम से देश की अपेक्षाओं के अनुसार कार्य किया है। इनमें क्षयरोग, मलेरिया, फाइलेरिया रोग, एच आई वी/एड्स जैसे संक्रामक रोगों के लिए अनुसंधान और वैक्सीनों एवं औषधियों का विकास, आण्विक जैविकी, जीनोमिक्स जैसी आधुनिक जैविकी, जैवसूचनाविज्ञान, प्रजनन क्षमता नियमन, कैंसर एवं अन्य असंचारी रोगों के क्षेत्रों में अनुसंधान, परामर्श सेवा और मानव संसाधन विकास, राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग तथा जैवआयुर्विज्ञान सूचनाविज्ञान एवं संचार जैसी गतिविधियां सम्मिलित हैं।

प्रतिवेदित वर्ष के दौरान भारत सरकार द्वारा भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद की व्यय वित्त समिति के लिए ज्ञापन को मंजूरी मिली है और 10वीं योजना अवधि के लिए 870 करोड़ रुपए की धनराशि आबंटित की गई है। वित्तीय धनराशि में वृद्धि हो जाने के साथ अब अनुसंधान गतिविधियां अत्यधिक उत्साह के साथ संचालित की जाएंगी। संसाधन के अनुकूलतम् उपयोग के लिए *कंबाइंड एप्रोच मैट्रिक्स* का प्रयोग किया जा रहा है, *ग्लोबल फोरम फॉर हेल्थ रिसर्च* (स्वास्थ्य अनुसंधान हेतु ग्लोबल फोरम) द्वारा इसका प्रयोग विभिन्न विषयों में स्वास्थ्य प्राथमिकताओं के निर्धारण में किया जाता है।

परिषद ने भारत में नवीन और उभरते संक्रमणों की पहचान करने में निरन्तर एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है जिनमें आंध्र प्रदेश और गुजरात में चण्डीपुर विषाणु मस्तिष्कशोथ और सिलीगुड़ी में रहस्यमय ज्वर के प्रकोप की पहचान प्रमुख हैं। अटलांटा स्थित सी डी सी (रोग नियंत्रण केन्द्र) के सहयोग में वर्ष 2001 में सिलीगुड़ी से एकत्रित जैविक नमूनों पर सम्पन्न अध्ययनों से पता चला कि इस प्रकोप के पीछे निपाह विषाणु का हाथ था।

पादप औषधियों पर भारतीय चिकित्सा पद्धति/आयुष, वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद और भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद के बीच एक अन्तर्एजेंसी सहयोग की स्थापना की गई जो 'गोल्डन ट्राएंगल' के नाम से प्रसिद्ध है। ससुनावघर, महाराष्ट्र में एक राष्ट्रीय प्राइमेट प्रजनन एवं अनुसंधान केन्द्र की स्थापना की जा रही है। यह केन्द्र प्राइमेट्स के अनुसंधान, जैविक परीक्षण एवं प्रजनन के लिए एक आधार के रूप में कार्य करेगा।

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद के विभिन्न संस्थानों द्वारा वैज्ञानिक जर्नलों से बेहतर रूप में सूचना प्राप्त करने के लिए एक *जे-गेट* कस्टम कंटेंट फॉर कंसोर्शिया- ICMR@JCCC की स्थापना की गई है। इसके द्वारा जे गेट के साथ उपलब्ध 2000 से अधिक जैवआयुर्विज्ञानी जर्नलों और 12,000 जर्नलों से संबद्ध ऑन लाइन सूचना प्राप्त की जा सकेगी और परिषद के संस्थानों में उपलब्ध जर्नलों के आदान-प्रदान में वृद्धि होगी।

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद द्वारा शोध पत्रों का प्रकाशन निरन्तर उत्कृष्ट रहा। वर्ष 2003 के दौरान परिषद के संस्थानों के वैज्ञानिकों द्वारा कुल 434 शोध पत्र प्रकाशित किए गए, इसकी तुलना में वर्ष 2002 में 330 शोध पत्र प्रकाशित किए गए थे। परिषद के प्रति शोध पत्र का इम्पैक्ट फैक्टर वर्ष 2002 में 2.030 से बढ़कर 2.180 हो गया। वित्तीय वर्ष 2003-04 के दौरान 1000 से अधिक शोध परियोजनाओं को वित्तीय सहायता प्रदान की गई। इस अवधि में वैज्ञानिक, तकनीकी और सहायक श्रेणी के लगभग 900 लोगों को प्रशिक्षित किया गया। इस वर्ष कुल 8 पेटेंट फाइल किए गए जिनमे एक यू एस पेटेंट शामिल है।

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद के *इंडियन जर्नल ऑफ मेडिकल रिसर्च, एनुअल रिपोर्ट,* वार्षिक प्रतिवेदन (हिन्दी रूपान्तरण) जैसे प्रकाशनों की गुणवत्ता बेहतर हुई है। हिन्दी में चिकित्साविज्ञान संबंधी लोकप्रिय पुस्तकों के लिए एक द्विवार्षिक पुरस्कार योजना की शुरुआत की गई है।

मुझे वित्तीय वर्ष 2003-2004 के लिए भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद के वार्षिक प्रतिवेदन को प्रस्तुत करते हुए प्रसन्नता हो रही है जिसमें इस अवधि की गतिविधियों के मुख्य अंश सम्मिलित हैं।

निर्मल कुमार गांगुली

(निर्मल कुमार गांगुली)

महानिदेशक